

S.H. RAZA
101, RUE DE CHARONNE
2, CITÉ DU COUVANT
75011 PARIS
TÉL. 43.70.97.64

पौस, १८ नवम्बर, १९८०.

प्रिय आदिलेश -

आभी आभी, तुम्हारा पत्र, ११ नवम्बर, भोपाल से भेजा, आज ही मिला। गोरखिया में चार साह, तुम्हारे, तुम्हारे काम के बारे में सोचता रहा। लिखने की कोशिश की, पर कुछ न लिख पाया। मुझे अहसास था कि बम्बई प्रदर्शनी महत्वपूर्ण है, मेरी विचार सहायक होंगे, वस समय। पौस लौट कर ही कुछ लिख पाया, और यह सप्ता, १२ नवम्बर को तुम्हें भिजाया था। एक पत्र के साथ। इसकी कॉपी (कुरशेद शांघी को भी १४ नवम्बर भिजाई है। आशा है दोनों पत्र मिलें होंगे, और कम समय के आकस्मिक भी कुछ फेटलाव दे पा सकेंगे।

एक गैरेश्वर का भी भेज दिया है। एक बलती तो मुझे भी दिखाई गई। और हाँ तो छेद करवा लेना। तब तक तो सके फेटलाव अर्द्ध ही छपवाना।

समाचार कितने ही निराश्रय हैं, मुझे लिखते रहे, अपनी, भोपाल की, देश की। खूबों मुझे अवश्य चाहिये। कभी कभी आखिरी से एक दो लेख भी। मेरी कोशिश यही है कि मैं देश से निरंतर, निजी, आत्मिक संपर्क रख सकूँ। इस दोष भी पास रहना चाहता हूँ, इतने पास कि वे जो पास हैं और नहीं समझ सकते, उनसे कह सकूँ कि प्रसंग ऐसा है, कि अगर सोचकर हम सक्रिय न रहेंगे, तो गोरखिया में केवल असम्भव निराशा, विनाशिता ही हमारी जिम्मेदारी होगी।

(कभी है कि, ^{इस}मॉडेल में, भोपाल में, कविता पाठ हो सकता है। अशोक के प्रति मुझे अनन्त स्नेह और आदर है।

आदिलेश, पत्र का जल्दी जवाब देना। आशा है खीरी होगा। तुम्हारी बम्बई प्रदर्शनी में, मैं साथ हूँ, उपस्थित हूँगा। भले ही - केवल इतना जाना की योजना है।

मेरी दुआएं, शुभकामनाएं -

